Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

पंजाब घराने के प्रसिद्ध तबला वादक पं. कश्मीरी लाल का सांगीतिक योगदान

Ashish Chauhan

Ph.D. Research Scholar, Department of Music, Himachal Pradesh University, Shimla

सार संक्षेपिका

किसी भी जगह का संगीत बंधनों से मुक्त, गायकों एवं वादकों की एक मधुर पुकार है। प्राचीन संस्कृति, परम्पराओं, रीति–रिवाज़ों आदि को उजागर करने के लिए संगीत का सदा महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यह संगीत हमें समय–समय पर विशेष घरानों, वंश परम्पराओं द्वारा मिलता रहा है, चाहे वह शास्त्रीय संगीत हो या लोक–संगीत। संगीत जगत में अनेकों ऐसी असाधारण प्रतिभाएं हुई हैं, जिन्होंने अपने जीवन संघर्षों और कड़ी मेहनत द्वारा संगीत के नए आयाम स्थापित किये है। गुरू–शिष्य परम्परा द्वारा यह संगीतमय विधा विश्व–विख्यात गुरू उ0 लक्ष्मण सिंह सीन से कश्मीरी लाल जी को प्राप्त हुई है। पं. कश्मीरी लाल पंजाब घराने की विधिवत शिक्षा को गुरू–शिष्य परम्परा द्वारा आज अनेकों शिष्यों में बांट रहे हैं। पं. जी लगभग 25 सालों से पंजाब घराने की विधिवत शिक्षा को प्रदेश में प्रदान कर रहे हैं। आपने संगीत जगत में जहां विशेषतः हिमाचल प्रदेश में पंजाब घराने का प्रचार–प्रसार किया है, वहीं अपनी रची हुई हज़ारों बंदिशों से घराने का विकास भी किया है। आपके दिये गए शिक्षण से अनेकों शिष्यों ने देशभर में अपनी कला का लोहा मनवाया है। तबला जगत में आज पं. कश्मीरी लाल का नाम बड़े सम्मान से लिया जाता है।

बीज शब्दः पं कश्मीरी लाल, पंजाब घराना, तबला वादन, वादन शैली, सांगीतिक योगदान।

पं. कश्मीरी लाल

पं. कश्मीरी लाल का जन्म 1 अक्टूबर, सन् 1956 में ग्राम कोटला, तहसील व ज़िला सोलन, हि.प्र. में हुआ। आपके पिता श्री नारायणू व माता श्रीमती कलावती के सानिध्य में रह कर सर्वप्रथम आपको संगीत सीखने की प्रेरणा मिली। आपने प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद व प्राचीन कला केंद्र चण्डीगढ़ दोनों संस्थाओं से संगीत विशारद् व संगीत प्रभाकर (समकक्ष एम.ए.) की डिग्री प्राप्त की है। आपने सन् 1976 में जालंधर के राजकीय हंसराज महिला महाविद्यालय में तबला अनुदेशक पद पर नियुक्त हुए। यहीं पर आपकी गुरुधारणा पंजाब घराने के सुप्रसिद्ध तबला वादक एवं गुरु उस्ताद लक्ष्मण सिंह सिन से हुई और इनसे आपने लगभग 4–5 वर्ष लगातार शिक्षण प्राप्त किया तथा पंजाब घराने की वादन शैली के अलावा आपने अन्य घरानों की वादन शैली को भी सीखा।

वर्ष 1981 में आप लोक–संपर्क विभाग के गीत एवं नाट्य विभाग में तबला वादक के पद पर नियुक्त हुए। यहां पर नौकरी करते हुए आपने सन् 1982 में सर्वप्रथम बार ग्रेड के लिए आकाशवाणी शिमला से वादन प्रस्तुत किया, जिसमें आपने 'बी' ग्रेड प्राप्त किया। लोक–संपर्क विभाग में आपने लगभग 8 वर्ष नौकरी की। इसी दौरान अक्टूबर, सन् 1988 में आपने पब्लिक सर्विस कमिशन के माध्यम से तबला अनुदेशक नियुक्त होकर राजकीय महाविद्यालय हमीरपुर में कार्यभार संभाला। सन् 1989 में आप स्थानांतरण होकर राजकीय महाविद्यालय नाहन चले गए। पारिवारिक परिस्थितियों के कारण कुछ महीने नौकरी करने के पश्चात् आपने नौकरी छोड़ दी।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

आपकी असाधारण प्रतिभा के कारण आपको 2 जुलाई, सन् 1990 में सैंट बीड्स कॉलेज में तबला अनुदेशक पद पर नियुक्त किया गया।

सन् 1992 से आप 'ऑल इंडिया रेडियो' से तबला वादन में 'बी–हाई' हैं। प्रतिभा के धनी होने के कारण आपको आकाशवाणी–दूरदर्शन केंद्रों द्वारा अनेकों बार स्वतंत्र वादन एवं तबला संगत के लिए बुलाया गया है। आपने संगीत जगत के अनेक विद्वानों के साथ अपना वादन प्रस्तुत किया है, जिनमें अहम्मद–मुहम्मद हुसैन, डॉ. रोशन भारती, माधुरी दण्डके, पं0 भीमसेन शर्मा, पं0 सतीश शर्मा, पं0 हरविंदर शर्मा आदि कलाकार शामिल हैं। शिमला के प्रसिद्ध 'गेयटी थियेटर' में आपने अनेकों बार अंर्तराष्ट्रीय–राष्ट्रीय स्तर के कलाकारों के साथ वादन प्रस्तुत किया है। हिमाचल ही नहीं, बाहरी राज्यों में भी वादन के लिए आपको सदैव बुलाया जाता रहा है। आपने देशभर में अपना तबला वादन प्रस्तुत किया है। आपके सांगीतिक योगदानों को देखते हुए आपको अनेकों बार सम्मानित किया गया हैः

1.सन् 2008, राष्ट्रीय शास्त्रीय संगीत सम्मेलन, संकल्प संस्था शाखा फैज़ाबाद (उतर प्रदेश) द्वारा सम्मानित किया गया है।

2.चन्ना अकादमी संगीत संस्था और मशहूर गायिका पीनाज़ मसानी द्वारा 'Life Time Achievement award'

3.सन् 2009, संकल्प संस्था शाखा रायपुर (छतीसगढ़) द्वारा संगत वादन के लिए सम्मान।

4.माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा अनेकों बार 'कला–सम्मान' प्राप्त।

इसके अलावा आपको अनेकों बार राष्ट्रीय व राज्य स्तरीय प्रतिस्पर्धाओं में निर्णायक के तौर पर बुलाया जाता रहा है। आपको संगीत व अन्य विभिन्न संस्थाओं द्वारा अनेकों बार सम्मानित किया गया है। लगभग 26 वर्षों के कार्यकाल के बाद 30 सितंबर, सन् 2016 को आप 'सैंट बीड्स कॉलेज' से सेवानिवृत हो चुके हैं। वर्तमान में आप अनेकों शिष्यों को पंजाब घराने की विधिवत शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। आपके अनेकों शिष्यों में श्री नीरज शांडिल, श्री विक्रम गंधर्व, श्री देवेंद्र ठाकुर, श्री राजेश कुमार, श्री ललित रघुवंशी यह सभी राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम स्थान ले चुके हैं।

उदेश्य

इस शोधकार्य का मुख्य उदेश्य पं कश्मीरी लाल का तबला वादन क्षेत्र में योगदान को प्रस्तुत करना है।

शोध क्षेत्र

यह शोधकार्य पं कश्मीरी लाल पर केन्द्रित है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोधकार्य के लिए वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

पं. कश्मीरी लाल की रचनाएं

तीनताल

पेशकार व कायदा–पेशकार (बियाड़ी लय)

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

तीनताल

पेशकार व कायदा–पेशकार (बियाड़ी लय)

धिंऽधाऽक्ड़ धातिंनातिट किटधाति धाधातिंना – तिंऽधाऽक्ड़ धातिंनात्रक धिंधाति धाधातिंना
x 2
तिंऽताऽक्ड़ तातिंनातिट किटताति तातातिंना – तिंऽधाऽक्ड़ धातिंनात्रक धिंधाति धाधातिंना
0 3

बढ़त

धिंऽधाऽक्ड़ धातिंनाधिं धिंनात्रक धिंधिंनाधा – तिंऽधाऽक्ड़ धातिंनात्रक धिंधाति धाधातिंना
x 2
तिंऽताऽक्ड़ तातिंनाति तिंनात्रक तितिंनाधा – तिंऽधाऽक्ड़ धातिंनात्रक धिंधाति धाधातिंना
0 3

(2)

धिंऽधाऽक्ड़ धातिंनातिट किटधाति धाधातिंना
x
तिंऽधाऽक्ड़ धातिंनात्रक
2
धाऽगिनाधागेनाधातीधागेनाधिट धागेनाधिटधिटधागेनातिंनाकिना
तिंऽताऽक्ड़ तातिंनातिट किटताति तातातिंना
0
तिंऽधाऽक्ड़ धातिंनात्रक
3
धाऽगिनाधागेनाधातीधागेनाधिट धागेनाधिटधिटधागेनातिंनाकिना

(3)

धिंऽधाऽक्ड़ धातिंनातिट किटधाति धाधातिंना
x
गिनाधिटधागेनाधिटधागेनाधिट धिटधिटधागेनाधिटधागेनाधिट
2
धाऽगिनाधागेनाधातीधागेनाधिट धागेनाधिटधिटधागेनातिंनाकिना
तिंऽताऽक्ड़ तातिंनातिट किटताति तातातिंना
0
गिनाधिटधागेनाधिटधागेनाधिट धिटधिटधागेनाधिटधागेनाधिट
3
धाऽगिनाधागेनाधातीधागेनाधिट धागेनाधिटधिटधागेनातिंनाकिना

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

(4)

धिंऽधाऽक्ड़	धातिंनात्रक
X	
धाऽगिनाधागेनाधातीधागेनाधिट	धागेनाधिटधिटधागेनाधिंनागिना
गिनाधिटधागेनाधिटधागेनाधिट	धिटधिटधागेनाधिटधागेनाधिट
2	
धाऽगिनाधागेनाधातीधागेनाधिट	धागेनाधिटधिटधागेनातिंनाकिना
तिंऽताऽक्ड़	तातिंनात्रक
0	
ताऽकिनाताकेनातातिताकेनातिट	ताकेनातिटतिटताकेनातिनाकिना
गिनाधिटधागेनाधिटधागेनाधिट	धिटधिटधागेनाधिटधागेनाधिट
3	
धाऽगिनाधागेनाधातीधागेनाधिट	धागेनाधिटधिटधागेनाधिंनागिना

(5)

गिनाधिटधागेनाधिटधागेनाधिट	धिटधिटधागेनाधिटधागेनाधिट
X	
धाऽगिनाधागेनाधातीधागेनाधिट	धागेनाधिटधिटधागेनातिंनाकिना
किनातिटताकेनातिटताकेनातिट	तिटतिटताकेनातिटताकेनातिट
2	
धाऽगिनाधागेनाधातीधागेनाधिट	धागेनाधिटधिटधागेनाधिंनागिना
गिनाधिटधागेनाधिटधागेनाधिट	धिटधिटधागेनाधिटधागेनाधिट
0	
धाऽगिनाधागेनाधातीधागेनाधिट	धागेनाधिटधिटधागेनातिंनाकिना
किनातिटताकेनातिटताकेनातिट	तिटतिटताकेनातिटताकेनातिट
3	
धाऽगिनाधागेनाधातीधागेनाधिट	धागेनाधिटधिटधागेनाधिंनागिना

तिहाई

धिटतधिटधागेनाधिंनधिटधिट	गिनाधिटधागेनाधिटधागेनाधिट
X	
धिटधिटधागेनाधिटधागेनाधिट	धाऽगिनाधागेनाधातिधागेनाधिट
धागेनाधिटधिटधागेनाधिंनागिना	धाऽऽऽऽऽधिटतधिटधागे
2	
नाधिंनधिटधिटगिनाधिटधागेना	धिटधागेनाधिटधिटधिटधागेना

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

धिटधागेनाधिटधाऽगिनाधागेना	धातिधागेनाधिटधागेनाधिटधिट
0	
धागेनाधिंनागिनाधाऽऽऽऽऽऽ	धिटतधिटधागेनाधिनधिटधिट
गिनाधिटधागेनाधिटधागेनाधिट	धिटधिटधागेनाधिटधागेनाधिट
3	
धाऽगिनाधागेनाधातिधागेनाधिट	धागेनाधिटधिटधागेनाधिंनागिना
धा	
x	

संगीत शिक्षा पर पं. कश्मीरी लाल जी के विचार

'यहां तबला नहीं था और अगर हिमाचल में तबला होता, तो मुझे बाहर सीखने न जाना पड़ता। मैं अक्सर रेडियो पर उस्तादों का तबला सुना करता था। इन लोगों को सुन कर मुझे प्रेरणा मिली है, कि मैंने भी इस स्तर का ही तबला सीखना है। जब मैं गुरूजी के पास जालंधर में था, तो मैंने गुरूजी की कृपा से अनेकों जगह संगत वादन किया। वहां मेरे वादन से बड़े लोग प्रभावित हुए और उन्होंने मुझे कहा आप तो बहुत अच्छा तबला बजा रहे हैं, कहां से हो? तो मैं हिमाचल कह देता था। सामने वाले की उस समय प्रतिक्रिया होती थी, कि 'ले! ओत्थे पहाड़ च किदां पहुंच गेया संगीत?' अक्सर इन बातों का मुझे सामना करना पड़ता था और इन बातों से मुझे बड़ी ठेस पहुंचती थी। मैंने निश्चय कर लिया कि, हिमाचल में संगीत की स्थिति को सुधारूंगा। हिमाचल में ही रह कर अनेक बच्चों, युवाओं में इस स्तर पर संगीत शिक्षा को प्रदान करूंगा, ताकि संगीत यहीं से एक धारा की तरह निचले व बाहरी क्षेत्रों की तरफ बहे। आज बच्चे अच्छा कर रहे हैं, National से Prize लेकर आ रहे हैं और खूब मेहनत कर रहे हैं।

कुछ वर्षों पहले टीवी पर एक बड़े नेता का कहना था, कि शिक्षा का स्तर घट रहा है। मैंने सोचा, यह आप ही लोगों के कारण है आप लोगों को देश–प्रदेश चलाने की अहम जिम्मेवारी सौंपी गई है। क्या आप लोग बेमबा नहीं कर सकते? कहां क्या कमी आ रही है? मैं तो यह समझता हूँ कि जिस प्रकार बच्चों का म्गंउ लिया जाता है, उसी प्रकार शिक्षण संस्थानों में जो शिक्षक है, इन सभी का भी एक Screening test लिया जाना चाहिए। क्या यह शिक्षक अच्छे से शिक्षा प्रदान कर रहे हैं? क्या इन लोगों को उस चीज़ का ज्ञान भी है? क्या यह अपने प्रत्येक छात्र को एक समान देखते हुए शिक्षा बांट रहे हैं? उसे सिर्फ Increment या D.A. की चिंता ही तो नहीं है?

संगीत शिक्षा एक क्रियात्मक विषय है। शिक्षण संस्थानों में यदि हम देखें तो हिमाचल से कितने छात्र बाहर संगीत में अपना नाम कमा चुके हैं या शिक्षण संस्थानों ने कितनी मदद इन बच्चों के लिए की है? संगीत में फनंदजपजल नहीं फनंसपजल उंजजमत करती है। यह सब प्रशासन की बात है।

हाल ही में शिमला में 'फाईन आर्ट्स' कॉलेज खुला है। Fine Arts का मतलब क्या हुआ? शिक्षण संस्थान जो specially fine arts के लिए खुला है, तो फिर वहां शिक्षा देने के लिए डिग्री वही, NET-SLET ये कहां तक ज़ायज है? वहां किसी Performer artist को रखा जाना चाहिए, जो रेडियो–दूरदर्शन से Highly grade पास हो और जिसे शास्त्र का भी पूर्ण ज्ञान हो। ऐसा ही व्यक्ति अपने Performing skills द्वारा बच्चों को भी आगे एक

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

अच्छा Performer बना सकता है। तभी सरकारी व गैर–सरकारी शिक्षण संस्थानों में से भी बच्चे बाहर निकल कर आ सकते हैं और देश–प्रदेश में युवा शक्ति का सशक्त उदाहरण पेश कर सकते हैं। इन चीजों को सरकार, प्रशासन ठीक कर सकते हैं ऐसे लोगों को आगे लाया जाना चाहिए, जो अच्छे घरानों से सीखे हों। ऐसे लोग ही संगीत शिक्षा के स्तर को उठा सकते हैं। एक विद्यार्थी से कलाकार बनने तक की यात्रा शिक्षण संस्थानों द्वारा संभव नहीं है, बल्कि गुरू–शिष्य परम्परा द्वारा ही यह स्तर पैदा किया जा सकता है। शिक्षण संस्थान डिग्री दे पाते हैं, संगीत नहीं। संगीत विधा में किसी एक विधा को सीखते हुए एक पूरा जन्म बीत जाता है, मगर वह भी कम पड़ता है और आज अनेकों संगीत अकादमियां एक ही जन्म में गायन, वादन और नृत्य यह सब सीखा रही हैं। यह बात तो एक चमत्कार से कम नहीं है। इसका परिणाम यह निकलता है, कि बाद में 5–6 वर्ष बर्बाद कर के जब घरानेदार बच्चों–युवाओं को सुनते हैं तो दंग रह जाते हैं। केवल गुरू–शिष्य परम्परा (घराना–पद्धति) द्वारा ही संगीत शिक्षा का विकास संभव हो सकता है।'

संदर्भ ग्रंथ सूची

चिश्ती, डॉ. एस.आर., तबला संचयन, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली
बंसल, परमानन्द एवं चन्द, ज्ञान (2009) संगीत सागरिका, प्रासंगिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली।
मिस्त्री डॉ. आबान ई.,पखावज और तबला के घराने एवं परम्पराएं, स्वर साधना समित्ति ज़र एनेक्स, मुम्बई

साक्षात्कार

पं. कश्मीरी लाल जी द्वारा प्राप्त साक्षात्कार